Mob No 9934683027 Study Material For B.A Part III rd Hon. (12)

Date. 28/07/2020 Paper 5th Theory.

Dr Tapali Mukherjee Topic घराना (डागुर घराना) Continued Previous Note

Associate Professor and H.O.D in Music R.M. College Saraswati

डागुर घराने का स्वरूप एवं विशेषताएँ

(1) कहा जाता है कि डागुर घराना ने ध्रुपद गायकी को चरम शिखर पर पहुँचाया और इसका विकास भी किए इसलिए ध्रुपद को "डागुर वन्धु घराना" भी कहा जाता है, इस घराने को डागर घराना इस लिए कहा जाता है क्योंकि ब्रज भाषा मे डागर का अर्थ होता है "रास्ता" दिखाने वाला :

(2) डागुर घराना "सहारनपुर घराने के नाम से भी प्रसिद्ध है। क्योंकि इस घराने की संरक्षक और संस्थापक बाबा बहराम खाँ सहारनपुर का रहने वाले थे। वह संस्कृत और हिन्दी भाषा का एक विद्वान थे।

(3) इनके पौत्र अल्लाबंदे और जाकिरुद्दीन खाँ ने अपनी ध्रुपद की गायन से पुरे भारतवर्ष मे धूम मचा दी। विद्वानो के मतानुसार यह दोनों गायको को "चाँद" और "सूरज" कहा जाता है।

(4) आलापचारी इस घराने की विशेष गुण है। जिस प्रकार किसी भी मंदिर मे "विग्रह" या मूर्ति को नखशिख से वर्णन करते हुए पुजा अर्चना किया जाता है उसी प्रकार इस घराने मे ध्रुपद गायन से पूर्व आलापचारी राग रूपी देवता की अर्चना के समान मानी जाती है।

P.T.O.

(5) चैनदारी इस घराने की गायकी का प्रधान गुण है, आलाप मे चैनदारी करना, मन्द्र सप्तक मे स्वरो का उतार-चढ़ाव तथा खुले स्वरो का प्रयोग करते घराने की मुख्य विशेषताएं है।

(6) आलाप करते समय ~~[illegible]~~ विभिन्न अलंकार मीड़, गमक आदि का प्रयोग, इस घराने की अंग है।

(7) ध्रुवपद-धमार गायकी केवल लय प्रधान नहीं है बल्कि इस घराने मे ध्रुवपद के माध्यम से पहले शब्दों और भाव को साकार करना तत्पश्चात विभिन्न लयकारी को प्रदर्शित करना पखावज और तबला वाद्य पर लम्बे बोल, पद के स्थान पर छोटे-छोटे टुकड़ो की लयकारी गायन के साथ संगत दिखाकर गायन मे रसात्मक सामंजस्य पैदा करना प्रमुख विशेषता है।

(8) इस घराने की मुख्य राग विशेषकर बिहाग, पूरिया; तोड़ी, मालकौंस, दरबारी तथा ललित सिंदूरा, कोमल रिषभ आसावरी राग है। इस प्रकार इस घराने की गायन अति प्रभावशाली, गहन गम्भीर माधुर्य से भरा हुआ, अत्यन्त गहराई से दिल को छूने वाली होती है।